



Free Training on Share Market

Read our Free Book on "Art of Stock Investing". YouTube Channel name - bse2nse

freestocktraining.in

OPEN

HOME संस्कृत शिक्षण पाठशाला » DOWNLOADS » लघुसिद्धान्तकौमुदी » साहित्यम् » दर्शनम् » स्तोत्रम्/गीतम् » कर्मकाण्डम् » विविध »

Home » कर्मकाण्ड » देव पूजा विधि Part-4 षोडशमातृका आदि-पूजन

देव पूजा विधि Part-4 षोडशमातृका आदि-पूजन

जगदानन्द झा 1:51 am कोई टिप्पणी नहीं

चित्रानुसार सोलह कोष्ठक बनायें। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करे। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे एवं निम्नाङ्कित मन्त्रा पढ़ते हुए आवाहन करें।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मनः कुलदेवता	लोकमातारः	देवसेना	मेधा
16	12	8	4
तुष्टिः	मातरः	जया	शची
15	11	7	3
पुष्टिः	स्वाहा	विजया	पद्मा
14	10	6	2
धृतिः	स्वधा	सावित्री	गौरी गणेश
13	9	4	1

ॐ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ पश्चिमै नमः पश्चिमा। ॐ शच्यै नमः शचीमा। ॐ मेधायै नमः मेधामा। ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रिमा। ॐ विजयायै नमः विजयामा। ॐ जयायै नमः जयामा।

ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामा। ॐ स्वधायै नमः स्वधामा। ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामा। ॐ मातृभ्यो नमः मातृरावा। ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावा। ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमा। ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिमा। ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः आत्मकुलदेवतामा। प्राण प्रतिष्ठा-ॐ मनोज्ञतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्विरिष्टं यज्ञं ऽ समिमं दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्नतामोऽम्प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगौर्यादिषोडशमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। इस मन्त्रा से प्रतिष्ठा कर ओं गौर्यै नमः इत्यादि नाम-मन्त्रों से अथवा पृथक् पृथक् ॐ गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः इससे षोडशोपचार अथवा यथालब्धोपचार पूजन समाप्त कर, ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम। निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः पदकर नारियल चढ़ायें। पुनः हाथ जोड़कर श्रीगौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः पूजनकर्मणो यन्मूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं मातृभ्यो प्रसादात्परिपूर्णमस्तु "गृहे वृद्धिशतानि भवन्तु" उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। यह बोले इति मातृकापूजन।

चतुःष्टियोगिनीपूजन

(अग्रिकोण में)-ओं आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्। योगाभ्यासेन संतुष्टा परं ध्यानसमन्विता।। दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचना। मूर्तिमती ह्यमृता च उग्रया चैवोग्ररूपिणी।। अनेक भावसंयुक्ता संसारार्णवतारिणी।। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः।। दिव्ययोगी-महायोगी-सिद्धयोगी गणेश्वरी। प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी।। हुङ्कारी सिद्धवेताली

Search

Popular

Tags

Blog Archives

लोकप्रिय पोस्ट



देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार, व्रतोद्यापन, हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...



संस्कृत कैसे सीखें

इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...



तर्पण विधि

प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बायें और दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...



लघुसिद्धान्तकौमुदी (अस्सन्धि-प्रकरणम्)

अथ
अस्सन्धिः If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

खर्परी भूतगामिनी।।

उध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांसभोजिनी। फूत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया।। रक्ता च घोररक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी।
चैरिका भारिका चण्डी वाराही मुण्डधारिणी। भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी। कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी।
कुण्डला तालकौमारी यमदूती करालिनी।। कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यन्त्रावाहिनी।। दुर्घटा विकटा घोरा कपाला विषलङ्घना।
चतुःशष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।। त्रैलोक्यपूजिता नित्यं देवमानुषयोगिभिः।। इस प्रकार आवाहन कर ॐ
चतुःशष्टियोगिनीभ्यो नमः इससे चन्दन पुष्प आदि द्वारा पूजन करें।

इति योगिनीपूजन

[सप्तधृतमातृका \(वसोद्रधारा\) पूजन](#)

आग्नेयकोण में किसी वेदी अथवा काष्ठपीठ (पाटा) पर प्रादेशमात्रा स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर 'श्रीः' लिखे। इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिण से करके उत्तर की ओर दे। इसी प्रकार सात बिन्दु क्रम से बनाना चाहिये।

इसके बाद नीचे वाले सात बिन्दुओं पर घी या दूध से प्रादेश मात्रा सात धाराएँ निम्नलिखित मन्त्रा से दें-

ॐ वसोः पवित्रामसि शतधारं वसोः पवित्रामसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु। वसोः पवित्रोण शतधारेण सुप्वा कामधुक्।। उस पर दही छोड़कर लाल सूत्रा लपेट दें। पुनः उपर्युक्त वसोः इस मंत्र को पढ़कर गुड़ के द्वारा बिन्दुओं की रेखाओं को क्रमशः ऊपर से परस्पर मिला दें। पुनः उन सात बिन्दुओं में क्रमशः देवता का आवाहन करें। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० स्था। ॐ भूर्भुवः स्वः

धृत्यै नमः घृतिमा. स्था। ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामा० स्था।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामा. स्था। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामा. स्था। ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमा. स्था।

ॐ मनोज्ञूतिः यह मंत्र एक बार पढ़कर वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु। इस मंत्र से प्रतिष्ठा करें। तदनन्तर-ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं सम। नैवेद्य स। प्रार्थना-यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

[आयुष्य मंत्र जप](#)

यजमान अञ्जलि में पुष्प रखें तथा ब्राह्मण आयुष्य मन्त्रा का पाठ करें। ॐ आयुष्यं वर्चस्य ऽ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ऽ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राय विंशतादुमाम्।।१॥ नतद्रक्षा ऽ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ऽ ह्येतत्। यो विभन्ति दाक्षायण ऽ हिरण्यं ऽ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।२॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यं ऽ शतानीकाय समनस्यमानाः। यन्म आबध्नन्मि शतशारदायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।३॥

पौराणिक श्लोक-यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु। ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवन्तु शरदः शतम्।। दीर्घा नागा नगा नद्योऽन्तस्सप्तार्णवा दिशः। अनन्तेनायुषा तेन जीवन्तु शरदः शतम्।। सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च। अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवन्तु शरदः शतम्।।

(इति आयुष्यमन्त्र जप)

Share: [f](#) [t](#) [G+](#) [in](#)



जगदानन्द झा

लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता, निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुड़ा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते हैं। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट

मुख्यपृष्ठ

पुरानी पोस्ट →

कोई टिप्पणी नहीं:

एक टिप्पणी भेजें

Free Training on Share Market

freestocktraining.in

Free Book on Stock Market

Read our Free Book on "Art of Stock Investin" YouTube Channel na bse2nse

OPEN


ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

खोज

लेखानुक्रमणी

- ▶ 2020 (23)
- ▶ 2019 (57)
- ▶ 2018 (63)
- ▶ 2017 (42)
- ▶ 2016 (32)
- ▶ 2015 (37)

अपनी टिप्पणी लिखें...

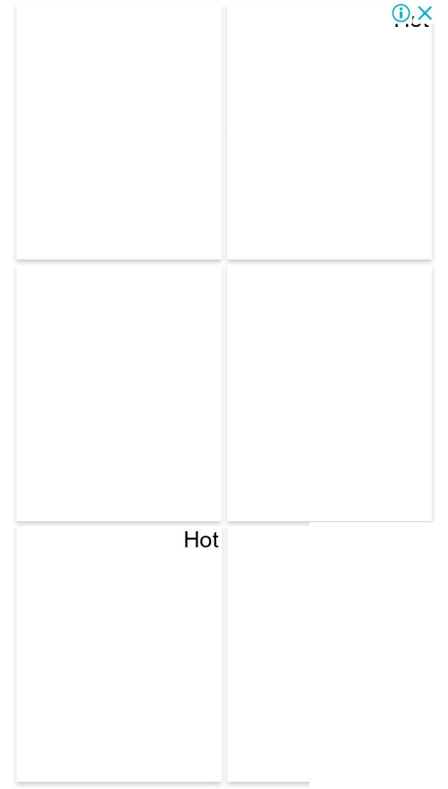

 इस रूप में टिप्पणी करें: Vasudev Shastri (

साइन आउट करें

डालें

पूर्वावलोकन

☐ मुझे सूचित करें



▼ 2014 (106)

► दिसंबर (6)

► नवंबर (8)

► अक्टूबर (5)

► सितंबर (2)

► अगस्त (9)

► जुलाई (2)

► मई (4)

► अप्रैल (11)

▼ मार्च (40)

धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा...

संस्कृत काव्यों में छन्द

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, एक समीक्षा

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (द्वितीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, स्मृति - स्व...

संस्कृत भाषा के विकास हेतु कार्ययोजना

संस्कृत भाषा और छन्दोबद्धता

संस्कृत की पुस्तकें वाया संस्कृत संस्थान

Learn Hieratic in Hindi Part -5 उपनयन
संस्कार

कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति
मूलगण्डान्त शान्ति प्रयोग
गृहप्रवेश विधि
शिलान्यास विधि
देव पूजा विधि Part-22 भागवत पूजन विधि
देव पूजा विधि Part-20 सत्यनारायण पूजा विधि
देव पूजा विधि Part-19 अभिषेक विधि
देव पूजा विधि Part-18 हवन विधि
देव पूजा विधि Part-17 कुश कण्डिका
देव पूजा विधि Part-16 प्राणप्रतिष्ठा विधि
देव पूजा विधि Part-15 सर्वतोभद्र पूजन
देव पूजा विधि Part-14 महाकाली, लेखनी, दीपावली
पूजन...
देव पूजा विधि Part-13 लक्ष्मी-पूजन
देव पूजा विधि Part-12 कुमारी-पूजन
देव पूजा विधि Part-11 दुर्गा-पूजन
देव पूजा विधि Part-10 पार्थिव-शिव-पूजन
देव पूजा विधि Part-9 शिव-पूजन
देव पूजा विधि Part-8 शालग्राम-पूजन
देव पूजा विधि Part-6 नवग्रह-स्थापन एवं पूजन
देव पूजा विधि Part-5 नान्दीश्राद्ध प्रयोग
देव पूजा विधि Part-4 षोडशमातृका आदि-पूजन
देव पूजा विधि Part-3 पुण्याहवाचनम्
देव पूजा विधि Part-2 कलशस्थापन
देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन
देवताओं के पूजन के नियम

► फ़रवरी (11)

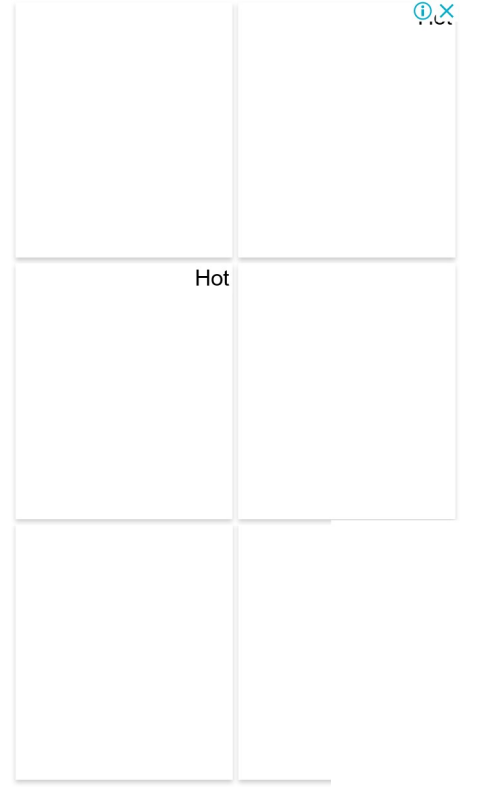
► जनवरी (8)

► 2013 (13)

► 2012 (55)

► 2011 (14)

जगदानन्द झा. Blogger द्वारा संचालित.



Hot

मास्तु प्रतिलिपि:

इस ब्लॉग के बारे में

संस्कृतभाषी ब्लॉग में मुख्यतः मेरा

वैचारिक लेख, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, आयुर्वेद, विधि, विद्वानों की जीवनी, 15 हजार संस्कृत पुस्तकों, 4 हजार पाण्डुलिपियों के नाम, उ.प्र. के संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि के नाम व पता, संस्कृत गीत

आदि विषयों पर सामग्री उपलब्ध है। आप लेवल में जाकर इच्छित विषय का चयन करें। ब्लॉग की सामग्री खोजने के लिए खोज सुविधा का उपयोग करें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 2

Powered by

[Publish for Free](#)

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 3

Powered by

[Publish for Free](#)

SANSKRITSARJANA वर्ष 2 अंक-1

Powered by

[Publish for Free](#)

मेरे बारे में



जगदानन्द झा

मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

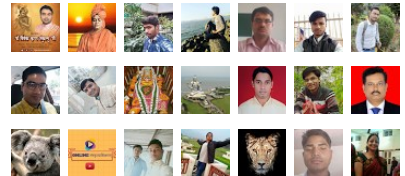
संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 1

Powered by

[Publish for Free](#)

समर्थक एवं मित्र

Followers (277) [Next](#)



[Follow](#)

RECENT POSTS

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था
कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत शिक्षण का पाठ्यक्रम
काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 2)
काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 1)
काव्यप्रकाश: (नवम उल्लास:)

अव्यवस्थित सूची

संस्कृत की प्रतियोगिताएँ
श्रीमद्भागवत की टीकाएँ
जनगणना 2011 में संस्कृत का स्थान
उत्तर प्रदेश के माध्यमिक संस्कृत विद्यालय

लेखाभिज्ञानम्

अंक	अभिनवगुप्त	अलंकार	आचार्य
आधुनिक संस्कृत	आधुनिक संस्कृत गीत		
आधुनिक संस्कृत साहित्य	आम्बेडकर		
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान	उत्तराखंड	ऋग्वेद	ऋतु
ऋषिका	कणाद	करक चतुर्थी	करण
कर्मकाण्ड	कामशास्त्र	कारक	काल
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्रकार	कुमाऊँ	कूर
कूर्माचल	कृदन्त	कोजगरा	कोश
गाय	गीतकार	गीति काव्य	गुरु
गोविन्दराज	ग्रह	चरण	छन्द
जगदानन्द झा	जगन्नाथ	जीवनी	ज्योतिष
तकनीकी शिक्षा	तद्धित	तिङन्त	तिथि
दर्शन	धन्वन्तरि	धर्म	धर्मशास्त्र
नाट्यशास्त्र	नायिका	नीति	पक्ष
पत्रकारिता	पत्रिका	पराङ्कुशाचार्य	पाण्डुलिपि
पालि	पुरस्कार	पुराण	पुरुषार्थोपदेश
पुस्तक संदर्शिका	पुस्तक सूची	पुस्तकालय	पूजा
प्रत्यभिज्ञा शास्त्र	प्रशस्तपाद	प्रहसन	प्रौद्योगिकी
विल्हण	बौद्ध	बौद्ध दर्शन	ब्रह्मसूत्र
भर्तृहरि	भामह	भाषा	भाव्य
		भोज प्रबन्ध	मगध

मनु	मनोरोग	महाविद्यालय	महोत्सव	मुहूर्त
योग	योग दिवस	रचनाकार	रस	राजभाषा
रामसेतु	रामानुजाचार्य	रामायण	राशि	रोजगार
रोमशा	लघुसिद्धान्तकौमुदी	लिपि	वर्गीकरण	
वल्लभ	वाल्मीकि	विद्यालय	विधि	विश्वनाथ
विश्वविद्यालय	वृष्टि	वेद	वैचारिक निबन्ध	वैशेषिक
व्याकरण	व्यास	व्रत	व्रत कथा	शंकराचार्य
शतक	शरद	शैव दर्शन	संख्या	संचार
संस्कृत	संस्कृत आयोग	संस्कृत गीतम्		
संस्कृत पत्रकारिता	संस्कृत प्रचार	संस्कृत लेखक		
संस्कृत वाचन	संस्कृत विद्यालय	संस्कृत शिक्षा		
संस्कृतसर्जना	सन्धि	समास	सम्मान	
सामुद्रिक शास्त्र	साहित्य	साहित्यदर्पण	सुबन्त	
सुभाषित	सूक्त	सूक्ति	सूचना	सोतर सिस्टम
सोशल मीडिया	स्तुति	स्तोत्र	स्त्रीप्रत्यय	स्मृति
स्वामि रङ्गरामानुजाचार्य	हास्य	हास्य काव्य		
हुलासगंज	DEVNAGARI SCRIPT	DHARMA		
EPIC	JAGDANAND JHA			
JRF IN SANSKRIT (CODE- 25)	KAHANI			
LIBRARY	MAGAZINE	MAHABHARATA		
MANUSCRIPTOLOGY	PUSTAK SANGDARSHIKA			
SANSKRIT	SANSKRIT LANGUAGE			
SANSKRIT SAPTAHA	SANSKRITSARJANA			
SEX	STUDENT CONTEST	UGC NET/ JRF		

PAGES

संस्कृत- शिक्षण- पाठशाला 1

संस्कृत शिक्षण पाठशाला 2

विद्वत्परिचय: 1

विद्वत्परिचय: 2

विद्वत्परिचय: 3

स्तोत्र - संग्रह:

पुस्तक विक्रय पटल

काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 2)

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था

काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 1)

काव्यप्रकाश: (नवम उल्लास:)

काव्यप्रकाश: (अष्टमोल्लास:)

जगदानन्द झा

जगदानन्द झा

photo

मध्यकालीन संस्कृत साहित्य

आपको क्या चाहिए?

इस ब्लॉग में संस्कृत के विविध विषयों पर आलेख उपलब्ध हैं, जो मोबाइल तथा वेब दोनों वर्जन में सुना, देखा व पढ़ा जा सकता है। मोबाइल के माध्यम से ब्लॉग पढ़ने वाले व्यक्ति, **search, ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें, लेखाभिज्ञानम्** तथा **लेखानुक्रमणी** के द्वारा इच्छित सामग्री खोज सकते हैं।कम्प्यूटर आदि पर मीनू बटन दृश्य हैं। यहाँ पाठ लेखन तथा विषय प्रतिपादन के लिए 20,000 से अधिक पृष्ठों, कुछेक ध्वनियों, रेखाचित्रों, चित्रों तथा चलचित्रों को संयोजित किया गया है। विषय सम्बद्धता व आपकी सहायता के लिए लेख के मध्य तथा अन्त में सम्बन्धित विषयों का लिंक दिया गया है। वहाँ क्लिक कर अपने ज्ञान को आप पुष्ट कर रहे हैं। इन्टरनेट पर अधिकचरे ज्ञान सामग्री की भरमार होती है। कई

बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है। इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।

Copyright © 2020 Sanskritbhashi संस्कृतभाषी | Powered by Blogger

Design by FlexiThemes | Blogger Theme by NewBloggerThemes.com